सत्य का संसक्तता सिद्धांत (Coherence Theory of Truth)

इस सिद्धांत के अनुसार सत्यता संसक्तता है| संसक्तता का सामान्य अर्थ है संगति (consistency)| संगति के इस सिद्धांत के अंतर्गत आत्म संगति (self-consistency) तथा परस्पर संगति (Mutual consistency) दोनों ही समझा जाता है| आत्म संगति आत्म विरोध का अभाव है| यदि किसी व्यक्ति को किसी वस्तु के संबंध में यह ज्ञान हो कि वह समूची वस्तु एक ही समय में लाल और काली दोनों हैं तो निश्चय ही उसके ज्ञान में आत्म विरोध है और वह असत्य है| परस्पर संगति की धारणा किसी ज्ञान की दूसरे ज्ञान के उदाहरणों के साथ संगति है| परंतु संसक्तता का अर्थ सिर्फ संगति नहीं है| ज्ञान की सत्यता के संदर्भ में 'संसक्तता' का अर्थ संगति के अलावा परस्पर निर्भरता या पोषकता (Mutual dependence or supportedness) भी है| परस्पर पोषक ताजा निर्भरता का प्रश्न वहां उठता है जहां किसी ज्ञान को ऐसे कुछ अन्य ज्ञान के उदाहरणों के संदर्भ में देखा जाए जो एक ही क्षेत्र या विषय से संबंध रखते हो और परस्पर एक तंत्र (system) का निर्माण करते हो| वस्तुतः सत्यता संबंधी संसक्तता सिद्धांत में इस तंत्र का बहुत अधिक महत्व है| कोई भी ज्ञान एक तंत्र के संदर्भ में ही सत्य या असत्य होता है| यदि उस पूरे तंत्र के साथ उसकी संगति है, तब तो वह सत्य होगा अन्यथा असत्य| ज्ञान के उस पूरे तंत्र से, जिससे कोई ज्ञान संबंधित है या जिसके अन्य अंशो और पहलुओं के साथ जिसकी परस्पर निर्भरता है, अलग या स्वतंत्र होकर वह ज्ञान सत्य या असत्य नहीं होता|

इस सिद्धांत को स्वीकार करने वालों में प्रत्ययवादी विचारक आते हैं| विशेष रूप से निरपेक्ष प्रत्ययवादी जैसे ब्रेडले बोसांके आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं| परंतु यह सिद्धांत प्रत्ययवादियों तक ही सीमित नहीं है| इसकी परिभाषा इस प्रकार की जा सकती है- कोई भी निर्णय सत्य है जब वह पहले से स्वीकृत सत्य निर्णय से संगति रखता हो| दूसरे शब्दों में कोई भी विचार जो पूर्व स्थापित सत्य में संगत रखता है तो वह सत्य और यदि असंगत है तो उसे असत्य कहा जाएगा|

आधुनिक काल में न्यूरेथ तथा हेंपेल जैसे कुछ विचारक मानते थे कि सत्यता प्रतिज्ञप्तियों का गुणधर्म है| प्रतिज्ञप्तियों ज्ञान का ही प्रतीक होती हैं| यह विचारक कहते हैं कि आमतौर पर ऐसा माना जाता है कि प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता तथ्यों के साथ उनका मेल देखकर निर्धारित की जा सकती है, परंतु वास्तव में हमारे पास ऐसा कोई रास्ता नहीं है कि प्रतिज्ञप्तियों का मिलान हम तथ्यों के साथ कर सकें| इसलिए प्रतिज्ञप्तियों के सत्यता असत्यता निर्धारण हमें प्रतिज्ञप्तियों के संदर्भ में ही करना पड़ेगा| और इसका रास्ता यह है कि कोई प्रतिज्ञप्ति जिस प्रतिज्ञप्ति तंत्र का एक अंश है उसके साथ उसकी संगति-असंगति हम देखें| यदि कोई प्रतिज्ञप्ति अपने क्षेत्र के अन्य प्रतिज्ञप्तियों के साथ संगति रखती है, तब तो वह सत्य है, अन्यथा असत्य| वे विचारक मुख्यतः वैज्ञानिक प्रतिज्ञप्तियों की सत्यता असत्यता के प्रश्न से संबंधित थे| विज्ञान के अनेकों विभाग हैं जिसमें से प्रत्येक में प्रतिज्ञप्तियों का एक व्यवस्थित तंत्र है| जिस किसी भी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता की जांच हमें करनी हो तो उसे हम उस तंत्र के अंदर रखें जिससे उसका विषय गत संबंध है और देखें कि इस तंत्र की अन्य प्रतिज्ञप्तियों के साथ उसकी संगति है या नहीं| इस प्रकार इस मत के अनुसार सत्यता संसक्तता है और इसलिए किसी प्रतिज्ञप्ति की सत्यता की जांच यह देखकर की जाती है कि वह अपने तंत्र की अन्य प्रतिज्ञप्तियों के साथ संसक्त है या नहीं|